रात्रिक्लास 3/11/68 :– यह तो बच्चे जानते हैं यह है ईश्वरीय परिवार। यहाँ समझ की बात है। दुनिया में है बेसमझी। अभी इस भारत में सभी हैं बेसमझ। भारत में 5000 वर्ष पहले जब इन ल॰ना॰ का राज्य था तो सभी समझदार थे। तब तो सारे विश्व के मालिक थे ना। अभी उन्हों को ऐसा समझदार किसने बनाया? यह हैं नई दुनिया के मालिक। नई दुनिया की स्थापना करते हैं बाप, जिसको शिवबाबा कहते हैं। शिवबाबा ने इन्हों को विश्व का मालिक बनाया है। यह थे तो और कोई धर्म न था। बाप स्मृति दिलाते हैं–हे भारतवासियो! तुम विश्व के मालिक थे ना, तो बहुत सुखी थे। सतयुग को सुखधाम कहा जाता है। अभी तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुग पर। यह बाप ही बतलाते हैं। अभी है पुरानी दुनिया का अंत, नई दुनिया की आदि। इन्हों को यह राज्य किसने दिया? गीता में है भगवानुवाच। अभी भगवान तो एक है। वह है ही बेहद का बाप। बाकी सभी हैं हद के। बेहद का बाप बेहद का वर्सा पुरुषोत्तम संगमयुग पर देते हैं। नई दुनिया और पुरानी दुनिया। अभी है पुरानी दुनिया, फिर नई दुनिया आनी है। बाप आते हैं पुरानी दुनिया का विनाश कर नई दुनिया की स्थापना करने। बाप समझाते हैं स्वर्ग की बादशाही हमने तुमको दी है। भारत अभी रंक है। रंक गरीब को कहा जाता है। सतयुग में राव थे ना। अभी रंक बना है। यह खेल है। सतयुग में राव बनते हैं। फिर रंक बनते हैं। यह नई दुनिया विश्व के मालिक थे। अभी कोई भी विश्व का मालिक नहीं, टुकड़े-2 हैं। अभी बाप इनकी राज्य की स्थापना कर बाकी सभी का विनाश करा देते हैं। विनाश तो होना ही है। बाप आते हैं पतित दुनिया को पावन बनाने। पतित विषय दुनिया को, पावन वायसलेस दुनिया को कहा जाता है। अभी तुम बीच में हो। विषियस से वायसलेस बन रहे हो। अभी बाप कहते हैं रखड़ी बांधो पवित्रता की तो पावन दुनिया के मालिक बन सकते हो। दैवीगुण भी धारण करनी है। रावण राज्य में आसुरी राज्य है। बाप आकर रामराज्य स्थापन कर रावण राज्य का विनाश कर देते हैं। तो यह है पढ़ाई। भगवानुवाच अर्थात् भगवान पढ़ाते हैं। राजयोग सिखलाते हैं। बाप भी है, यह दादा है। इनमें प्रवेश कर जो तुमको पढ़ाते हैं उनको कहा जाता है शिवबाबा। बाप शिव, दादा प्रजापिता ब्रह्मा। प्रजापिता ब्रह्मा हो गया ग्रेट-2 ग्रेंड फादर। तुमको इस समय तीन फादर

हैं। लौकिक भी है। जब कोई आफतें आती हैं तो हे भगवान गॉड फादर कह याद करते हैं। इनको कहा जाता है अलौकिक बाप। इन द्वारा तुमको वर्सा मिलता है बाप से। बाप समझाते हैं लौकिक और पारलौकिक बाप से वर्सा मिलता है। यह है रथ। इन द्वारा मैं तुमको विश्व की बादशाही देता हूँ। भारत स्वर्ग था। सभी सम्पूर्ण निर्विकारी थे। अभी है नर्क। इसमें सभी हैं सम्पूर्ण विकारी। एक भी निर्विकारी नहीं। निर्विकारी होते ही हैं नई दुनिया में। निर्विकारी दुनिया में कोई विकारी हो नहीं सकता। विकारी राज्य में कोई भी निर्विकारी हो न सके। नई दुनिया निर्विकारी, फिर पुरानी दुनिया होती है तो विकारी बनते हैं। भारत को कहा जाता है इनसॉलवेंट। प्रजा का प्रजा पर राज्य है पंचायती राज्य। गीता में कहा है कौरव राज्य। अभी राज्य पाण्डव कौरव दोनों का नहीं है। तुम पण्डे हो सभी को सुखधाम-शांति का रास्ता बताते हो। स्वर्ग में था इन्हों का राज्य। सतयुग में जयजयकार होती है, अभी है हाहाकार। नेचरल कैलेमिटीज़ भी होनी है। यह पुरानी दुनिया बाकी आठ वर्ष है। इनका भी तुम हिसाब बताते हो। यहाँ रहने की जगह नहीं। अनाज भी कम। अपरंअपार दुःख हैं। सभी तरफ लड़ते-झगड़ते कितने दुःखी हो पड़े हैं। कितने गंद में रहते हैं। बाबा ने कहा था लिखो कितने दुख हैं। यह दुनिया सुख और दुःख की है। सतयुग में सुख, त्रेता में सेमी सुख, 16 कला से 14कला हो जाते हैं। फिर बहुत दुःख के बाप(बाद) बहुत सुख होते हैं। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। बाप ही पढ़ाते हैं। इसलिए यहाँ तुम आते हो। श्रीमत पर भारत को श्रेष्ठ बनाते हो। पतित भ्रष्ट को कहा जाता। श्रेष्ठ को कहा जाता है सम्पूर्ण निर्वि॰। सम्पूर्ण विकारी जो हैं वह उनकी महिमा गाते हैं। अभी मौत सिर पर खड़ा है। झाड़ की तो वृद्धि होनी ही है। यह राजयोग की पाठशाला है। तुम बच्चों को बाप से वर्सा मिल रहा है, तुम बाप से योग लगाते हो। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को स्प्रीचुअल नॉलेज दे रहे हैं। आत्मा ही अच्छे वा बुरे कर्म का संस्कार ले जाती है। इन्हों को देवी-देवता कहा जाता है। तुमको

तो देवता नहीं कहा जाता। यह है मनुष्य सृष्टि, सतयुग में देवी-देवताओं की सृष्टि। द्वापर में मनुष्य सृष्टि शुरू होती है। सतयुग कहा जाता है सद्गति को, कलियुग कहा जाता है दुर्गति को। यह (दु)निया का चक्र है। नई से पुरानी, पुरानी से नई बनती है। सभी आत्माएँ हैं भाई-भाई। एक बाप से वर्सा मिल..ा है। बेहद का बाप स्वर्ग की बादशाही, हद का बाप नर्क की बादशाही देते हैं। नर्क की बादशाही नहीं कहेंगे। नर्कवासी ही कहेंगे। रावण राज्य में नर्कवासी, रामराज्य में हैं स्वर्गवासी। वह होते ही हैं सतयुग में। यह है प(ढ़ा)ई। तुम कहते हो हम मनुष्य से देवता बनने आये हैं। मनुष्य मनुष्य को देवता बना न सके। भगवान का यह ..... है, इस बच्चे बाजु में आकर बैठते हैं। वह पुनर्जन्म तो लेते ही नहीं। तुम बच्चे पावन बन रहे हो। बाकी सभी विनाश हो जावेंगे। और कोई खंड होते ही नहीं। फिर वृद्धि को पाते जाते हैं। इनको कहा जाता है विराट मनुष्यों का झाड़। बाप कहते हैं मैं हर 5000 वर्ष बाद आकर चित्र झाड़ आदि बनाता हूँ। बाप कहते हैं मैं बैठ करेक्ट (कर)ता हूँ। सारे भारत में ऐसा झाड़ किसके पास नहीं होगा। भक्ति को झूठामार्ग, ज्ञान को सच्चा मार्ग कहा जाता है। बाप सच्ची कथा सुनाकर तुमको नर से ना॰ बनाते हैं। अमर बाप द्वारा सतयुग में तुम जैसे कि अमर बनते ....। काल खाता नहीं। यह है ऊँच ते ऊँच पढ़ाई, ऊँच ते ऊँच पद। अभी श्रीमत पर चल तुम अपनी राजधानी (स्थ)ापन कर रहे हो। पवित्र बन औरों को बनाना है। पुरुषार्थ करेंगे तो स्वर्ग में ज़रूर आवेंगे। जितना जो समझदार बन (औरों) को बनावेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। सतयुग में पवित्रता है तो सुख-शांति भी है। बाप आधा कल्प ..... तुमको ध(णी) का बना देते हैं। बाप कहते हैं तुमने सबसे जास्ती मेरी ग्लानि की है। भारत कितना अच्छा था, (अभी) कितना बु(र)ा है। सूरत मनुष्य, सीरत बंदर मिसल है। यहाँ बैठ एक अलफ को याद करना है। अलफ अल्ला। .... की बादशाही सारी हमारी। तुम सभी ब्रदर्स को बाप से हर 5000 वर्ष बाद वर्सा मिलता है। यह पढ़ाई है। .... में सोने का बर्तन चाहिए जो धारण हो सके। पतित को धारणा नहीं हो सकेगी। अच्छा, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।